भ्रष्टाचार हटाओ सीरियल : बाबा रामदेव भी बनेंगे किरदार

-ललित कार्तिकेय

हम एक सीरियल समय में रह रहे हैं। खबरें भी वही चरित्र धारण करती जा रही हैं। जो खबर मात्र एक घटना हो, हमारी स्मृति में नहीं टिकती। हमारा दिमाग उसे किसी बड़े मंजर में रख उसका अर्थ निकालने का कसाला नहीं करता। लेकिन जो खबर लगातार खबरों की कड़ी बनाए, वह हमारा ध्यान खींचे रखती है। लेकिन यहां भी जितना बताया-दिखाया जाता है,लगभग उतना ही या फिर हम कोई चालू जुमला निष्कर्ष में रख एकतरफ हो जाते हैं। यह बात हमें अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन के बाद से बखूबी दिखती है। जाहिर है यह एक मुद्दा था जो जनता के हर उस तबके के दिल से जुड़ता था जिसके पास भ्रष्टाचार करने की ताकत नहीं है। ऐसे लोगों की संख्या भ्रष्टाचार करने वालों के मुकाबले बहुत ही ज्यादा है। भले ही आंदोलन में शामिल या उसके पक्ष में बोल उठने वाले बहुत से लोग स्वयं छोटा- मोटा भ्रष्टचार करते हों फिर भी उनकी भावनाओं को दिखावा या पाखंड नहीं कहा जा सकता जैसा कि अंग्रेजी की एक मशूहर पत्रिका ने हाल ही में कहा है। खैर...! टीवी के पर्दे पर यह आंदोलन एक आंदोलित करने वाले सीरियल ही के रूप में दिखाया गया। इससे मुद्दा पोषित ही हुआ।

लोकपाल विधेयक का प्रारुप बनाने वाली समिति में नागर समाज के सदस्यों के नामों की घोषणा के बाद दूसरा एपीसोड शुरु हुआ। समिति के सदस्यों को लेकर । बाप-बेटे की मशहूर वकील जोड़ी इसके केंद्र में रही। स्वयं नागर समाज के कुछ प्रमुख व प्रसिद्ध प्रतिनिधियों ने वैचारिक मतभेदों की आड़ में अपनी नाराजगी जताई। बाबा रामदेव ने भी। फिर कांग्रेस के महासचिव भी एक किरदार बन गए। उसके बाद एक सीडी आ गई। फिर आए राजनीतिक संसार में फिक्सर के नाम से मशहूर अमरसिंह आरापों और सुबूतों का पिटारा लेकर। बेहद ड्रामाई अंदाज में। लगभग मदारीनुमा शैली में। मनोरंजक था यह एपीसोड। अब शुरु हुआ है एक और एपीसोड इस सीरियल का। बाबा रामदेव एपीसोड। उन्होंने

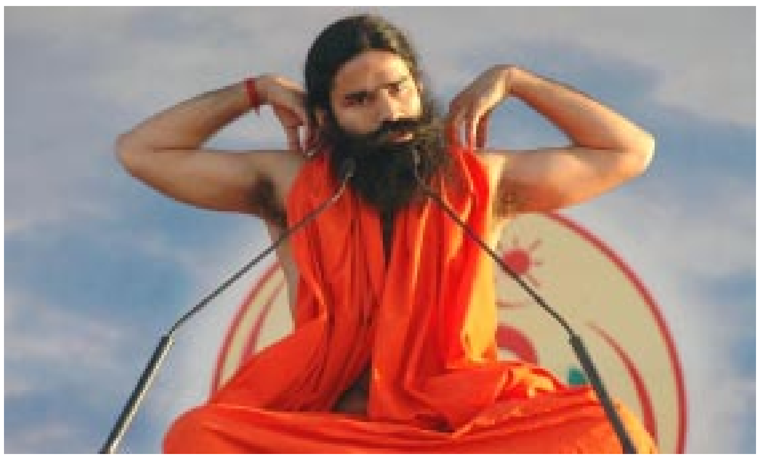

अन्न हजारे के बाद अब में मीटाऊंगा भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार विरोध को एक प्रतियोगिता में बदल दिया है। अब वे हजारे के आंदोलन से अलग अपना भ्रष्टाचार विरोधी अभियान शुरु करेंगे। समय-समय पर विवादास्पद बयान देने के लिए मशहूर एक महसचिव पहले ही बाबा रामदेव पर भ्रष्ट होने का अप्रत्यक्ष आरोप लगा चकु हैं इतने कम समय में इतनी सारी संपत्ति के स्वामी होने की सफाई बाबा रामेदव से मांग कर।

अन्ना हजारे और रामदेव बाबा में बहुत बड़े अंतर हैं। अन्ना एक प्रामाणिक व्यक्तित्व हैं। एक वृक्ष की तरह उगे। अपने गांव में और बाहर उनके किए में एक तारतम्य व एकसूत्रता है। वे नाटकीयता से दूर हैं। एक पारदर्शी आदमी। उनके पास सपने हैं और उनके सपने आम आदमी की जिंदगी से जुड़े हैं। रामदेव बाबा बहुत हद तक उस व्यक्ति की तरह हैं जो हवाई जहाज से कूद एकाएक दृश्य पर उतर आया हो। संस्कृत में कहते हैं-अवतरति इति अवतार- यानी जो ऊपर से उतरा है अवतार है। सो बाबा वृक्ष नहीं अवतार हैं। वे उगे नहीं, टीवी से उतरें हैं और हर छाया की तरह अपने कद से बड़े दिखते हैं। उनके योग प्रवचनों तक में एक नाटकीयता है। यानी वे आकर्षित और प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। पतंजलि के योगसूत्र के योग से वे कितना पास या दूर हैं यह एक अलग बहस का विषय है। वे अपना राजनीतिक दल बना चुनावों में उम्मीदवार उतारने की आकांक्षा भी रखते हैं। लंबी-चौड़ी कमाई है उनकी जिसका खुलासा दिग्विजय सिंह कई बार मांग चुके हैं। उनकी दवाओं को लेकर वृंदा कारत पहले ही सवाल उठा चुकी हैं। यह मानना गलत न होगा कि उनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं हैं। राजनेताओं से उनके रिश्ते जाहिर हैं। राजनेताओं के खिलाफ अन्ना की जंग भी जाहिर है। समिति में अपना नाम न होने के बारे में एक वक्तव्य में उजागार हुई उनकी कुंठा छिपाए नहीं छिपी। इन तमाम बातों के मद्दे नजर वे अन्ना के मुकाबले में नहीं आ पाते।

भ्रष्टाचार हटाओ आंदोलन को एक प्रतियोगिता में बदलने की उनकी कोशिश पर सोचने पर और कई सवाल पूछने पर मजबूर करती है। अगर नीयत भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग की है तो वे अपने तमाम संसाधनों और शिष्यों की विशाल संख्या के साथ अन्ना के आंदोलन का अंग क्यों नहीं बनें? क्यों वे अपनी कोशिश को भव्य बनाने की कोशिश कर रहे हैं अपनी पहल में शामिल होने वाले लोगों की संख्या पर जोर डाल कर? अगर भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन का उनका नक्शा अन्ना व उनके साथियों से अलग है तो उन्होंने इन सभी के साथ संवाद कर अन्ना के आंदोलन की रूपरेखा को अधिक समावेशी और समृद्ध बनाने का प्रयत्न क्यों नहीं किया? इस तरज पर अगर यह लड़ाई चली तो हमारे सामने कई आंदोलन होंगे और उनमें होड़ मच जाएगी। फिर जाहिर है कि भ्रष्टचार का विरोध पृष्ठभूमि में चला जाएगा और बचेगी होड़ जो लोगों के दिमाग में पहले से मौजूद सब एक जैसे है के नजरिए को पुख्ता करेगी। खतरों की डगर होगी वह। एक नये तरह का भ्रष्टाचार।

इस आंदोलन के सामने पहले ही बहुत सारी चुनौतियां हैं। उनमें से जंतर-मंतर के अनशन पर हुए खर्चे के सवाल, भूषण पर लगे आरोपों, सीडी और अमर सिंह आदि के रूप में सामने आ चुकी हैं। बहुत सी अभी सामने आनी हैं। बहुत सूझ-बूझ की जरूरत पड़ेगी शुरुआती उबाल के बाद मध्यम वर्ग का पहला सा समर्थन शायद ही मिले। अन्ना का इरादा इसे राजनीतिक रंगत देने का नहीं। राजनीति में आने के अपने खतरे हैं। राजनीति का अर्थ हो चला है भ्रष्टाचार। गौडा के बेटे के वक्तव्य में वह बेहिचक नंगई के साथ स्वीकारा जा चुका हैं। नेता, नोकरशाह, निगम क्षेत्र मीडिया और अपराध जगत अब सत्ता प्रतिष्ठान निर्मित करते हैं। यानी ऊपर की सारी ताकतें कहीं भीतरखाने एक हैं। जन साधारण एकजुट नहीं। अन्ना का आंदोलन एक नन्ही किरण है जिसका भविष्य बहुत ही अनिश्चित है। ऐसे में इस तरह के आंदोलन का ब्यूटी कॉन्टेस्ट की तरह एक प्रतियोगिता में बदल दिए जाने का एक नया खतरा पैदा करना क्या दर्शाता है? बहुत विचारणीय है यह बात। वह दिन ज्यादा दूर नहीं जब बाबा रामदेव पर भ्रष्टचार के आरोप लगेंगे। क्या वे उस स्थिति से पहले ही निपटने के हथियार के रूप में अपना अलग आंदोलन चलाना चाहते हैं? राम जानें!! अन्ना पर तो इस तरह का आरोप शायद ही कभी लगे। बाबा पर पहले ही लग चुके हैं। आगे उन आरोपों के गहराने की संभावना भरपूर है।

हर खबर कुछ कहती है...

पिकासो की एक मशहूर पेंटिंग है- गुएर्निका। यू तो एक खास ऐतिहासिक संदर्भ में बनाई गई कलाकृति है लेकिन हर महान कलाकृति की तरह वह अपने देश-काल से स्वायत्त भी है। बहुत सारे स्थानों के बहुत सारे समय उससे चित्रित और व्याख्यायित हो जाते हैं। हमारा समय भी वह पेंटिंग जैसे किसी बच्चे की बनाई हुई है। यानी दुनिया को अपने समय की घटनाओं को बच्चे की अदूषित और मासूम निगहों से देखा गया है। बच्चा अबोध नहीं होता। हमारी संसार से दूषित निगाह उसे अबोध मान सकती है। बच्चे के पास शायद सबसे बड़ी समझदारी होती है। किसी बुद्ध जैसी। बहरहाल। उसमें वे तमाम चीजें जो जिंदगी रचती हैं टुकड़े हो गई हैं। विखंडित हो गया है जीवन। शेक्सपीयर के एक मशहूर नाटक का नायक ऐसी ही स्थिति में कहा है- द टाईम्स आर आऊट ऑफ जॉइंट्स। बिखर गया है समय। यानी जिंदगी। पिकासो की पेंटिंग एक दु:स्वपन रचती है, लेकिन साथ ही उसमें जिंदगी को रचने वाली बुनियादी चीजों की गहरी और सयानी समझ भी है। हमारा समय भी एक दु:स्वप्न बनाता है अगर हम बच्चे की बुद्ध नजरों से देखें, अगर हम अपने घर बैंक खाते की रकम, अपनी कार और बाकी चीजों को देख एक थुलथुल और गाबदू संतोष से भर बुद्धू नहीं हो गए हों। बुद्धू नजर संचय करती है जिंदगी नहीं जीती। किसी अनदेखे भविष्य की परछाई का पीछा करती है, वर्तमान की अनदेखी। आप टीवी में खबरें देख लें, अखबार पढ़ लें। जिंदगी को रचने वाली बुनियादी चीजें बिखरी पड़ी हैं। पर क्या उन्हें जोड़ा नहीं जा सकता? उन्हें मिला कर एक मुकम्मिल ईकाई नहीं बनाई जा सकती? बनाई जा सकती है। मनुष्य समाज और जिंदगी बहुत बिखरी है और इंसान ने उसे दोबारा से रचा है।

ओसामा को सजा मिली मगर पाकिस्तान को ?

-अरुण नेहरू

राष्ट्रपति बराक ओबामा ने 9/11/2001 के घटनाक्रम का पटाक्षेप कर दिया और एक दशक के बाद न्याय के लम्बे हाथों ने ओसामा बिन लादेन को इस्लामाबाद के समीप जा दबोचा। इस कमांडो कार्रवाई के नए से नए विवरण सामने आएंगे पर इसमें कोई संदेह नहीं कि यह बहुत ही सफल कारनामा था। लादेन अब एक वैश्विक आंदोलन का नेता नहीं रह गया था और वह जान बचाता फिर रहा था, फिर भी वह 9/11 के हमले का प्रतीक और विश्व व्यापार केंद्र में 3000 लोगों के अलावा यूरोप, ब्रिटेन, अफ्रीका, मध्य पूर्व और भारत व अन्य कई दक्षिण एशियाई देशों में जघन्य हत्याओं का दोषी था। उसके रहने के लिए 2005 में बनाया गया घर पाकिस्तानी सरकार, सेना और आईएसआई की मिलीभगत का प्रमाण है जिन्होंने उसे सुरक्षित शरण स्थली उपलब्ध करवाई (शायद उन्होंने उसकी कीमत भी वसूली ?)। अब निहित स्वार्थों द्वारा फैलाई जा रही झूठी कहानियों पर बहुत कम लोग ही विश्वास करेंगे। कमांडो कार्रवाई के बाद इस घर से संबंधित ढेर सारी जानकारियां सामने आएंगी, परन्तु इसके अंदर की परिस्थितियां एक भगोड़े व्यक्ति के जीवन की कहानी कहती हैं- न कोई इंटरनेट और न ही कोई फोन। आखिर एक ग्लोबल साम्राज्य को सिर्फ कुछ कोरियरों (संदेशवाहकों) की सहायता से तो चलाया नहीं जा सकता।

ओसामा मारा गया परन्तु उसकी पत्नी व कई सारे बच्चों वाले उसके परिवार को जीवन दान दे दिया गया। विश्व भर में उसके आदेशों पर हुए आत्मघाती हमलों और बम धमाकों में निर्दोष महिलाओं और बच्चों के कत्लेआम के मद्देनजर यह बहुत बड़ी रहमदिली है। इस कार्रवाई से पहले कई घटनाएं हुईं और इसके बाद भी कई होंगी। बेशक यह सत्य है कि गत एक दशक के दौरान आतंक के ताने-बाने में नई कड़ियों का विकास हुआ है परन्तु पाकिस्तान को अनेक सवालों का जवाब देना होगा। आज की दुनिया में मुश्किल से ही कोई रहस्य छिपा रह सकता है और पाकिस्तान के लिए भी यह समझदारी की बात होगी कि वह न तो हकीकतों से मुकरे और न ही भयभीत हो। पाकिस्तान में 30-40 हजार नागरिक मौत का शिकार हो चुके हैं और यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा क्योंकि वहां की व्यवस्था में छिपे हुए उचक्के लोग आतंकियों व अपराधियों को शरणस्थली और 'कर्मभूमि' उपलब्ध करवाएंगे।

व्यावहारिक रूप से पाकिस्तान हर लिहाज से एक आतंकवादी देश बन चुका है और यह आश्चर्य की बात नहीं कि अमेरिका ने वहां अपना दूतावास बंद तथा वीजा जारी करने का काम निलंबित कर दिया है। यदि पाकिस्तानी सरकार ने अभी भी आतंकवाद के विरुद्ध और कदम न उठाया तो दूसरे देश भी ऐसा कदम उठा सकते हैं। यह मुद्दा अब किसी विवाद का मोहताज नहीं रह गया। उकसाहटें थमी नहीं हैं और हमें याद रखना होगा कि आतंकवाद अनेक लोगों के लिए लाभप्रद कारोबार है। आश्चर्य की बात नहीं कि मुंबई में हुए 26/11 हमलों के मुख्य आरोपी ने पाकिस्तान में आतंकियों के लिए प्रार्थनाओं की हिमायत की। भारत में ऐसे कुछ धिक्कार योग्य लोग हो सकते हैं और उनकी अवहेलना करनी चाहिए। हम एक स्वतंत्र समाज हैं और प्रत्येक मजहब में चरमपंथियों का एक छोटा-सा वर्ग होता है परन्तु वह सिवाय अपने निहित स्वार्थों के किसी और का प्रतिनिधित्व नहीं करता।

हम पूरी तरह चौकस हैं और हमें हो रहे घटनाक्रम पर नजर रखते हुए इंतजार करना होगा। कमांडो कार्रवाई और ओसाबा बिन लादेन की मौत 9/11 की घटनाओं का परिणाम नजदीक ले आई है। अमेरिकी राष्ट्रपति को इससे राजनीतिक लाभ होगा परन्तु लोकमत का कोई पता नहीं कि किधर को चल पड़े। मेरा मानना है कि अमेरिका में पाकिस्तान पर नजरें जमीं रहे और आतंकवाद से लड़ने के नाम पर इसे दी जाने वाली 3 अरब डालर की सहायता का मामला खटाई में पड़ सकता है। भारत 3 दशक से पाकिस्तान के बारे में तथ्यात्मक आधार पर जो कहता आया है वह अब जगजाहिर हो गया है। किसी भी लोकतांत्रिक देश में वोट बैंक की राजनीति व्यवस्था का अटूट अंग होती है। राष्ट्रपति ओबामा व उनकी पार्टी को भी चुनाव का सामना करना है। सफल कमांडो कार्रवाई से उन्होंने कई नकारात्मक बातों को सकारात्मक में बदल लिया है। बेशक ओसामा को मार गिराने में 10 वर्ष लग गए फिर भी यह घटना एक बड़ा सार्वजनिक मुद्दा बन गई है। मैं भविष्यवाणी तो नहीं कर सकता, पर मेरा यह मानना है कि इराक, अफगानिस्तान और पाकिस्तान फिर से चर्चा के केंद्र में होंगे। अमेरिका की अर्थव्यवस्था राष्ट्रपति ओबामा के नेतृत्व में पटरी पर लौट रही है। उनकी डेमोक्रेटिक पार्टी काफी अच्छी स्थिति में है और पूरे उत्साह से उनके समर्थन में एकजुट हो जाएगी। चुनाव में उनकी संभावनाएं बहुत अच्छी रहेंगी। एक दशक बाद ही सही आखिर 9/11 के पीड़ितों को इंसाफ मिल ही गया। 26/11 के दोषियों और पाकिस्तान को भी इसी प्रकार अपने किए की सजा मिलनी अभी बाकी है, परन्तु हम अमेरिका जैसे नहीं, और न ही हम पाकिस्तान को 3 अरब डालर की सहायता देते हैं। न ही हम उसे आतंकवादियों से लड़ने (इसे मजाक ही समझें) के लिए हथियार देते हैं इसलिए वह 26/11 के कातिलों को तलाशने के लिए हमारी सहायता भी नहीं करेगा। हाफिज सईद से शुरू होकर हमारे इन कातिलों की लम्बी सूची है। हम अपनी सुरक्षा से अनिश्चितकाल के लिए तो खिलवाड़ कर नहीं सकते और उदासीन नहीं हो सकते। आगामी कुछ दिनों में यह स्पष्ट हो जाएगा कि अमेरिका ने क्या नीति अपनाई है और फिर हमें भी दीर्घकालिक नीति तैयार करके न सिर्फ पाकिस्तान बल्कि अमेरिका को भी अपने दृढ़ संकल्प का दीदार करवाना होगा। आज की स्थिति में पाकिस्तान एक आतंकवादी राजसत्ता है और ऐसे अपराधियों व सामूहिक हत्याओं के दोषियों से निपटने में दोहरा मापदंड नहीं होना चाहिए। मुझे इस बात से कुछ हैरानी भी है कि अमेरिका और ब्रिटेन मुशर्रफ, हुस्नी मुबारक, जो अपने-अपने देशों के नागरिकों के साथ अनुचित व्यवहार करते रहे इन पूर्व तानाशाहों से बहुत नरमी से पेश आते हैं। इन तानाशाहों ने वहां अरबों रुपयों की सम्पत्ति बनाई हुई है। यहां तक कि गद्दाफी और उसके बेटों ने भी ब्रिटेन व यूरोप के कई भागों में भारी निवेश कर रखा है। मुशर्रफ लंदन में बहुत शाही सुविधाओं में रह रहे हैं। सवाल उठता है कि क्या इन देशों के प्रति उनकी पूर्व सेवाओं के मद्देनजर वहां की गुप्तचर सेवाएं उनका वित्त पोषण कर रही हैं।